Degree-Ist (Hons) Paper-Ist **State : Origin and Development:** Lecture-05

Dr. Umakant Paswan
Department of Political Science
J.N. College, Madhubani

राज्य की उत्पत्ति का विकासवादी या ऐतिहासिक सिद्धान्त : (Evolutionary or Historical Theory of the origin of the State)

राज्य की उत्पत्ति का विकासवादी या ऐतिहासिक सिद्धान्त यह मानता है कि राज्य ऐतिहासिक विकास का परिणाम है। यह सिद्धान्त यह मानता है कि राज्य ईश्वर द्वारा नहीं बनाया गया है और राज्य की उत्पत्ति में धर्म का योगदान रहा है। इसके अनुसार राज्य केवल शक्ति का फल नहीं है। राज्य की उत्पत्ति में युद्धों का भी भाग रहा है। राज्य समझौते का प्रतिफल नहीं है यद्यपि जनता की सहयोग के बिना राज्य अधिक समय तक नहीं टिक सकता है। इस प्रकार ऐतिहासिक या विकासवादी सिद्धान्त के अनुसार क्रमशः विकास हुआ और सामाजिक विकास की एक विशेष अवस्था में राज्य की उत्पत्ति हुई। राज्य न तो ईश्वर की कृति है, न किसी श्रेष्ठतर भौतिक शक्ति का परिणाम है। राज्य समझौते का भी परिणाम नहीं है, न ही परिवारों का विस्तार मात्र। यह एक नैसर्गिक ऐतिहासिक या विकासवादी राज्य का निर्माण कुछ वर्षों में नहीं हुआ बल्कि इसके स्वरूप ग्रहण करने में हजारों वर्षों का समय लगा। सभ्यता के विकास के साथ-साथ क्रमशः समाज जटिल (complex) होता गया और इस प्रकार संगठन की आवश्यकता समाज में महसूस की गयी होगी जो जीवन को व्यवस्थित कर सके। इसी के पूर्ति हेतु राज्य का जन्म हुआ।

विकासवादी सिद्धान्त मोटे तौर पर दो बातों को बल देता है।

(i) राज्य का निर्माण नहीं हुआ है बल्कि यह विकास की प्रक्रिया का प्रतिफल है।

(ii) राज्य के विकास में किसी एक कारक का नहीं बल्कि अनेक कारकों का योगदान रहा।

(i) **रक्त-सम्बंध : (Kinship)** किसी भी सामाजिक जीवन का आधार रक्त-सम्बंध या सजातीयता होती है। इसी से सामाजिक जीवन की पहली ईकाई परिभाषित हुआ। कालान्तर में जनसंख्या में वृद्धि से कई परिवारों से कुल और कई कुलों को मिलाकर गोत्र का निर्माण हुआ। प्रारम्भिक अवस्था में परिवार, पितृसत्तात्मक (Patriarchical) थे। परन्तु कुछ का मानना है कि मातृसत्तात्मक (Matriarchal) था। प्रत्येक परिवार का, कुल का तथा गोत्र का एक मुखिया होता था जिसे सम्बंधित ईकाई पर सर्वोच्च सत्ता प्राप्त हुआ करती थी। मुखिया के द्वारा ही सम्बंधित ईकाई

Scanned with CamScanner

शासन के साथ ही ईकाई के सदस्यों के मध्य विवादों का निस्तारण किया जाता था। इसी पद्धति पर आगे चलकर राज्य की उत्पत्ति हुई। आर. एम. मैकाइवर ने लिखा है कि "रक्त-सम्बंध ने समाज का निर्माण किया तथा समाज से आगे चलकर राज्य की उत्पत्ति हुई।"

(2) धर्म: (Religion) आदिम समाज में धर्म का अत्यधिक महत्व था। क्योंकि उसमें बुद्धि और तर्कशक्ति का विकास नहीं हुआ था इसलिए पारलौकिक शक्ति के प्रति उसमें कुछ ज्यादा ही रुझान था। वह जन्म तथा मृत्यु के तथ्यों को भी समझने में असमर्थ था। मानव जीवन उसके लिए रहस्यों से भरा हुआ था। उसे यह भी भय था कि क्रोधित होने पर मृतक आत्मा कष्ट का कारण बन सकती है, उसने आत्मा का पूजा प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार पितृ-पूजा प्रारम्भ हुआ। धर्म के इस स्वरूप ने परिवारों को एकता के सूत्र में बाँधा क्योंकि वे एक ही कुल की पूजा किया करते थे। इस प्रकार रक्त-सम्बंध और धर्म दोनो ने ही आदिम अवस्था में सामाजिक एकता का कार्य सम्पन्न किया। पारलौकिक शक्तियों से भयभीत होने के कारण ही मनुष्य ने सूर्य, वायु, अग्नि, नदी जैसी प्राकृतिक शक्तियों की उपासना प्रारम्भ की। एक ही कबीले के लोग प्रायः एक जैसी शक्तियों की ही पूजा किया करते थे। धार्मिक और प्राकृतिक शक्तियों से भयभीत ऐसे समाज में जो व्यक्ति कुछ चमत्कारी कार्य दिखा सकता था वह क्रमशः महत्वपूर्ण होता गया। भूमि का उपजाऊपन, वर्षा या सूखे का होना फसल की सफलता या असफलता, युद्ध में कबीले की विजय या पराजय जैसी बातें उसकी क्षमता और कर्मकाण्डों पर निर्भर माने जाने लगी। धीरे-धीरे अपनी अलौकिक क्षमताओं के कारण उसे सम्बंधित कबीले का मुखिया माना जाने लगा। प्राचीन समाजों में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ राजा और पुरोहित एक ही व्यक्ति हुआ करते थे। इस प्रकार धर्म-आधारित सत्ता का उदय हुआ जो आगे चलकर राजनीति सत्ता का आधार बनी। गेटेल का मानना है कि धार्मिक मान्यताओं ने आदिम समाज में अराजकता को दबाने और व्यक्ति को आज्ञाकारी बनाने में भी यथेष्ट भूमिका का निर्वाह किया।

Scanned with CamScanner

(3) शक्ति या युद्ध: (Force or war): राज्य के प्रारम्भिक विकास में शक्ति या युद्ध ने भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। ओपेनहायमर के अनुसार "सभी राज्यों की उत्पत्ति का कारण किसानों तथा श्रमिकों, वृक्षहीन घास के ऊँचे मैदानों तथा तराई के क्षेत्रों के बीच सम्पर्क हैं।" उल्लेखनीय है कि कृषि के आविष्कार के बाद ~~मनुष्यों~~ मनुष्य गाँवो में बस गये। अतः अन्य प्रकार की दस्तकारियों जैसे बढ़ईगिरी लोहारी आदि का जन्म हुआ। जिससे युद्ध अधिक संगठित तरीके से होने लगा। सुरक्षा तथा अन्य समूहों के आक्रमण से बचने के प्रयोजन से समूह के सदस्यों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह एक नेता या नायक के अधीन रहें। स्वभाविक रूप से यह नेता या नायक पर्याप्त शक्तिशाली और उनकी रक्षा करने एवं युद्ध में विजय दिलवाने में पर्याप्त सक्षम हुआ करता था। इस प्रक्रिया में अंततः सबसे शक्तिशाली समूह या कबीले ने बाकी सभी समूहों को अपने अधीन कर लिया। युद्ध की समाप्ति के बाद भी लोग उसकी आज्ञाओं का भयवश पालन करते रहें। इस प्रकार सर्वाधिक सशक्त समूह के नायक की सत्ता सुस्थापित हो गई। उसका पद वंशानुगत होता था। इसी से आगे चलकर राजतंत्रों की उत्पत्ति हुई।

राज्य का जन्म युद्ध या बल के परिणाम स्वरुप हुआ इस पर असहमति है परन्तु सभी विद्वान स्वीकार करते हैं कि विस्तार की प्रक्रिया और सत्ता के उद्‌भव में युद्ध ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

(4) आर्थिक गतिविधियाँ: (Economic Activities) राज्य की उत्पत्ति में आर्थिक गतिविधियों एवं आवश्यकताओं का भी योगदान रहा है। जीवन निर्वाह के लिए मनुष्य हमेशा से ही किसी न किसी प्रकार की आर्थिक गतिविधि में रत रहा है। आदिम अवस्था में वह घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करता था। मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुख्य रूप से शिकार या जंगलो में उपलब्ध कंदमूल-फल आदि पर निर्भर रहा करता था। आर्थिक दृष्टि से यह जीवन अनिश्चित था क्योंकि उत्पादन के साधनों और प्रणाली की मनुष्य को जानकारी नही थी। धीरे-धीरे मनुष्य को पशुपालन की जानकारी हुई। उसका जीवन अपेक्षाकृत स्थिर हुआ परन्तु अभी भी उसका जीवन भ्रमणशील ही रहा। वर्गो के उत्पत्ति के प्रारम्भिक बीज इस चरण में देखे जा सकते हैं। क्योंकि जिनके पास ज्यादा

Scanned with CamScanner

पशु वह उतना ही सम्पन्न माना जाता था कालांतर में कृषि की जानकारी हुई। अब उसका जीवन पूर्णतः स्थिर हो गया और वह एक ही स्थान पर रूप से रहने लगा। इस प्रकार राज्य का एक आवश्यक तत्व - निश्चित भू-भाग की स्थापना हो गयी। व्यक्तिगत सम्पत्ति का भी जन्म हो गया जिसके कारण व्यक्तियों में आपस में विवाद होने लगे। सम्पत्ति की रक्षा और विवादों के निस्तारण के लिये एक सत्ता की आवश्यकता महसूस की गई। इन सब स्थितियों ने राज्य जैसी ईकाई के आविर्भाव को अवश्यम्भावी बना दिया।

(5) राजनीतिक चेतना (Political Consciousness): अरस्तू ने लिखा है कि मनुष्य स्वभाव से एक राजनीतिक प्राणी है। इसका आशय यह है कि मनुष्य की आवश्यकताओं और उद्देश्यो की पूर्ति राज्य में ही सम्भव है। यूनानी विचारक राज्य को समाज का पर्यायवाची मानते थे। हॉब्स का कहना है कि मनुष्य एक सामाजिक या संगठित जीवन जीने की इच्छा रखता है इसका कारण यह है कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर है। मनुष्य के इस उद्देश्य की पूर्ति एक संगठित और सामूहिक जीवन में ही हो सकती है। प्रारम्भिक समय में मनुष्य बर्बर था। ~~उस समय~~ उस समय उत्पादन और न ही व्यक्तिगत सम्पत्ति थी। जिसके कारण आपसी मतभेद नहीं थे पशुपालन और कृषि की जानकारी के साथ ही क्रमशः व्यक्तिगत सम्पत्ति का जन्म हुआ। सम्पत्ति की अवधारणा के उदय के साथ सम्पत्ति के नियमन के लिए स्थापित नियम, उत्पादनकारी गतिविधियों के निर्वाह एवं अराजकतापूर्ण वातावरण तथा सुरक्षा के लिए शक्तिशाली सत्ता की आवश्यकता महसूस हुई। इस आंतरिक भावना या राजनीतिक चेतना ने भी राज्य की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसे सामाजिक चेतना भी कह सकते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि ऐतिहासिक या विकासवादी सिद्धान्त राज्य की उत्पत्ति में एक लम्बी विकास प्रक्रिया को मानती है। इस सिद्धान्त को राज्य की उत्पत्ति का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त कहा जाता है।

Scanned with CamScanner